नियमावली

1. प्रारम्भिक या वैकल्पिक परीक्षाओं के परीक्षार्थी को रक्षाबंधन (राखी) तक अपने आवेदन-पत्र (Form) भेजना आवश्यक है।

सभी परीक्षाओं के लिए आवेदन का प्रारूप इस प्रकार है। इस प्रारूप के अनुसार आवेदन पत्र हाथ से लिखवाकर परीक्षा बोर्ड को दिया जा सकता है। मुद्रित फार्म ही भरना होगा, ऐसा नियम नहीं है।

आवेदन-पत्र

1. वर्ष.....।

2. केन्द्र (जहाँ से परीक्षा देना चाहते हैं)

3. नाम :.....

4. जो परीक्षा देना चाहते है.....

5. कौन-कौन सा पत्र देना चाहते है.....

6. पूर्व में उर्त्तीण की गई-

   1. अंतिम परीक्षा एवं पत्र 2. वर्ष 3. केन्द्र

   (यदि पूर्व परीक्षा गृहस्थावस्था में दी है तो गृहस्थावस्था के नाम का ही उल्लेख करे।)

2. परीक्षार्थी अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार एक वर्ष में एक अथवा दो अथवा तीन या चारों ही प्रश्न पत्र की परीक्षा दे सकते हैं।

जिन परीक्षार्थीयों ने भूषण, कोविद, विभाकर एवं विशारद (I & II) का प्रथम पत्र नहीं दिया है उन्हें आगे भूषण आदि की समानान्तर (Equivalent) परीक्षा का चतुर्थ पत्र देना है। इसी प्रकार जिन्होंने भूषण आदि परीक्षाओं का चतुर्थ पत्र नहीं दिया है उन्हें उसके समानान्तर (Eauivalent) परीक्षा का प्रथम पत्र देना है। ये व्यवस्था केवल 2014 तक चालू रहेगी।

पुराने पाठ्यक्रम के अनुसार जिन्होंने ये पत्र नहीं दिया है	**उन्हें इस वर्ष इसके स्थान पर ये पत्र देना होगा।**
भूषण, कोविद, विभाकर, विशारद I & II प्रथम पत्र	भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद चतुर्थ पत्र
भूषण, कोविद, विभाकर, विशारद I & II द्वितीय पत्र	भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद द्वितीय पत्र
भूषण, कोविद, विभाकर, विशारद I & II तृतीय पत्र	भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद तृतीय पत्र
भूषण, कोविद, विभाकर, विशारद I & II चतुर्थ पत्र	भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद प्रथम पत्र

4. कुछ परीक्षाओं के नामों में भाग 1, 2 इत्यादि हटाकर नये नाम दिये गये है ताकि विशेष स्पष्टता रहे।

पूर्व के पाठ्यक्रम की अमुक परीक्षा	इस नवीन पाठ्यक्रम की अमुक परीक्षा समानान्तर की है
विशारद (प्रथम खण्ड)	मनीषी
विशारद (द्वितीय खण्ड)	विशारद
शास्त्री (प्रथम खण्ड)	शास्त्री
रत्नाकर (प्रथम खण्ड)	विपश्चित
रत्नाकर (द्वितीय खण्ड)	तत्त्वज्ञ

इसी आधार पर भविष्य में परीक्षा संबंधी योग्यता को समझा जावे।

5. मेघावी रूचिशील विद्यार्थियों के पास प्रारम्भिक परीक्षाओं के चार पत्रों की तैयारी करने के उपरान्त भी अतिरिक्त समय रहता है उस समय का उपयोग करने के लिए तथा विद्यार्थियों में कंठस्थ ज्ञान आदि की प्रवृत्ति बढ़ाने के लिए ''वैकल्पिक'' परीक्षाओं को रखा गया है।

इन वैकल्पिक परीक्षाओं को किसी भी स्तर का विद्यार्थी किन्हीं भी परीक्षाओं को देते हुए दे सकता है। यदि विद्यार्थी चाहे तो चारों वैकल्पिक विषयों की परीक्षाएँ (सबका एक-एक पेपर) भी एक साथ दे सकता है, लेकिन यह अनिवार्य है कि जिस वैकल्पिक विषय की परीक्षा देना चाहता है उस विषय की वैकल्पिक के भूषण से ही प्रारम्भ करके क्रमशः परीक्षा देनी होगी।

6. पूरे पाठ्यक्रम में जहाँ-जहाँ कंठस्थ नहीं लिखा है वहाँ-वहाँ गाथा कंठस्थ रूप से नहीं पूछी जाएगी। जहाँ-जहाँ 'भावार्थ' लिखा है, वहाँ-वहाँ (1) गाथाएँ कंठस्थ रूप से नहीं पूछी जाएगी (2) शब्दशः अर्थ नहीं पूछा जायेगा (3) पूरी गाथा का भावार्थ जानना जरूरी है।

7. प्रारम्भिक परीक्षाओं (भूषण से विशारद तक) में किसी एक पत्र में उत्तीर्णांक (Pass Mark) 40 (चालीस) माने जायेंगे बशर्ते कि जिस प्रश्न पत्र में जितने विषयों के अलग-अलग अंक निर्धारित किए गए हैं उन सभी विषयों में निर्धारित अंकों के 1/4 अंक प्राप्त होवे अन्यथा कुल 40 अंक प्राप्त होने पर भी उस पत्र में अनुत्तीर्णता मानी जाएगी। लेकिन यदि किसी विद्यार्थी ने उस पत्र में कुल 60 या उससे अधिक अंक प्राप्त कर लिए है तो उसके लिए प्रत्येक विषय में निर्धारित अंकों का एक चौथाई (1/4) प्राप्त करना अनिवार्य नहीं होगा।

उदाहरणार्थ

किसी परीक्षार्थी को भूषण के प्रथम पत्र में 40 अंक मिले, लेकिन दशवैकालिक सूत्र (भावार्थ) में 10 से कम अंक मिले या दशवैकालिक (कंठस्थ) में 7 1/2 से कम अंक मिले या भक्तामर में 7 1/2 से कम अंक मिले तो उस विद्यार्थी का भूषण का प्रथम-पत्र उत्तीर्ण नहीं माना जायेगा।

यदि किसी परीक्षार्थी को भूषण के प्रथम पत्र में 60 या 60 से अधिक अंक मिले तो उसे दशवैकालिक सूत्र (भावार्थ) में 10 अंक या दशवैकालिक सूत्र (कंठस्थ) में 7 1/2 अंक या भक्तामर में 7 1/2 अंक प्राप्त करना जरूरी नहीं है, इससे कम होने पर भी वह उत्तीर्ण माना जाएगा।

In any of the intial (प्रारम्भिक) exams at last 40 Marks will have to be obtained to pass the same provided the student obtain at least 25% of the marks in different division of the same paper VIZ in the

First paper of Bhooshan, the student will have to get 40 Marks to pass but if he gets less than to Marks in Dashvaikalika Sutra (Meaning) or less than 7 1/2 Marks in DashvavKalika sutra (Learning by Heart) of less than 7 1/2 Marks in Bhaktomar. He will not be considered passed in that paper, however if gets 60 Marks or more in that paper, he will be considered passed even it he dose not get the required 10 Marks in Dashvaikalika sutra (Meaning) or 7 1/2 Marks in Dashvaikalika sutra (Learning by heart) or 7 1/2 Marks in Bhaktamar.

8. प्रारम्भिक परीक्षाओं में से किन्हीं दो परीक्षाओं के समान क्रमांक वाले प्रश्न-पत्र एक ही वर्ष में नहीं दिये जा सकते है। उदाहरणार्थ-कोविद का द्वितीय पत्र तथा विभाकर का द्वितीय पत्र एक ही वर्ष में नहीं दिये जा सकते हैं।

9. परीक्षार्थी यह ध्यान रखे कि भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद इस क्रम में परीक्षा देना अनिवार्य है। जैसे भूषण के प्रथम-पत्र को उत्तीर्ण किया हुआ परीक्षार्थी ही कोविद के प्रथम पत्र को देने की योग्यता प्राप्त कर सकेगा। यही क्रम का उल्लंघन किया जायेगा (जैसे-यदि कोई भूषण के द्वितीय पत्र में उत्तीर्ण हो गया, पर कोविद के द्वितीय पत्र में उत्तीर्ण हुए बिना ही विभाकर के द्वितीय पत्र की परीक्षा दे दी तो उसकी यह परीक्षा रद्द कर दी जाएगी।

10. कंठस्थ परीक्षाओं (वैकल्पिक और वर्गीकृत कंठस्थ) के विषय में विद्यार्थी ने जिस पुस्तक से आगम कंठस्थ किये हैं उत्तरपुस्तिका में उस पुस्तक का नाम प्रकाशक एवं संस्करण उल्लिखित करे, ताकि परीक्षक उसके आधार से जाँच कर सके।

11. परीक्षा के ऐन मौके पर यदि परीक्षार्थी (जिसने पूर्व में आवेदन प्रस्तुत करके रोल नं. प्राप्त कर लिए हो) आकस्मिक बीमारी या दीक्षा आदि कारणों से परीक्षा हेतु उपस्थित न हो पाये तो परीक्षा बोर्ड द्वारा कुछ समय में उसकी अलग से परीक्षा ली जा सकेगी। इस हेतु परीक्षार्थी को शीघ्र आवेदन करना होगा एवं परीक्षा बोर्ड द्वारा कारण सम्यग ज्ञात होने पर स्वतंत्र परीक्षा की व्यवस्था की जा सकेगी। कारण की वास्तविकता के विषय में बोर्ड का निर्णय मान्य होगा।

+ जिन्होंने पुराने पाठ्यक्रमों से विशारद (द्वितीय खण्ड) या शास्त्री या रत्नाकर परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है या इस नये पाठ्यक्रम से भविष्य में विशारद उत्तीर्ण कर लेंगे, वे वगीकृत परीक्षाओं में प्रवेश ले सकते है।

+ केवल 'वर्गीकृत कंठस्थ परीक्षा' प्रारंभ से ही दी जा सकती है। इसके लिए विशारद या अन्य कोई भी परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए आवश्यकता नहीं है।

+ वर्गीकृत परीक्षाओं संबंधी विशेष नियम आगे दिए गए हैं।

प्रारम्भिक परीक्षाएँ

परीक्षा का नाम	संक्षिप्त नाम	परीक्षा में प्रश्न-पत्र	उत्तीर्णांक प्रतिशत	योग्यता
जैन सिद्धान्त भूषण	प्रारम्भिक परीक्षा-प्रथम	4	40	जो भी रूचिशील हो
जैन सिद्धान्त कोविद	प्रारम्भिक परीक्षा-द्वितीय	4	40	जैन सिद्धान्त-भूषण उत्तीर्ण
जैन सिद्धान्त विभाकर	प्रारम्भिक परीक्षा-तृतीय	4	40	जैन सिद्धान्त-कोविद उत्तीर्ण
जैन सिद्धान्त मनीषी	प्रारम्भिक परीक्षा-चतुर्थ	4	40	जैन सिद्धान्त-विभाकर उत्तीर्ण
जैन सिद्धान्त विशारद	प्रारम्भिक परीक्षा-पंचम	4	40	जैन सिद्धान्त-मनीषी उत्तीर्ण

वैकल्पिक परीक्षाएँ

जैन आगम कंठस्थ भूषण	वैकल्पिक कंठस्थ-प्रथम	1	40	जो भी रूचिशील हो
जैन आगम कंठस्थ कोविद	वैकल्पिक कंठस्थ-द्वितीय	1	40	जैन आगम कंठस्थ भूषण उत्तीर्ण
जैन आगम कंठस्थ विभाकर	वैकल्पिक कंठस्थ-तृतीय	1	40	जैन आगम कंठस्थ कोविद उत्तीर्ण
जैन आगम कंठस्थ मनीषी	वैकल्पिक कंठस्थ-चतुर्थ	1	40	जैन आगम कंठस्थ विभाकर उत्तीर्ण
जैन आगम कंठस्थ विशारद	वैकल्पिक कंठस्थ-पंचम	1	40	जैन आगम कंठस्थ मनीषी उत्तीर्ण
जैन स्तोक भूषण	वैकल्पिक स्तोक-प्रथम	1	40	जो भी रूचिशील हो
जैन स्तोक कोविद	वैकल्पिक स्तोक-द्वितीय	1	40	जैन स्तोक भूषण उत्तीर्ण
जैन स्तोक विभाकर	वैकल्पिक स्तोक-तृतीय	1	40	जैन स्तोक कोविद उत्तीर्ण
जैन स्तोक मनीषी	वैकल्पिक स्तोक-चतुर्थ	1	40	जैन स्तोक विभाकर उत्तीर्ण
जैन स्तोक विशारद	वैकल्पिक स्तोक-पंचम	1	40	जैन स्तोक मनीषी उत्तीर्ण
जैन संस्कृत प्राकृत-भूषण	वैकल्पिक संस्कृत प्राकृत-प्रथम	1	40	जो भी रूचिशील हो
जैन संस्कृत प्राकृत-कोविद	वैकल्पिक संस्कृत प्राकृत-द्वितीय	1	40	संस्कृत प्राकृत भूषण उत्तीर्ण
जैन संस्कत प्राकृत-विभाकर	वैकल्पिक संस्कृत प्राकृत-तृतीय	1	40	संस्कृत प्राकृत कोविद उत्तीर्ण
जैन संस्कृत प्राकृत-मनीषी	वैकल्पिक संस्कृत प्राकृत-चतुर्थ	1	40	संस्कृत प्राकृत विभाकर उत्तीर्ण
जैन संस्कृत प्राकृत-विशारद	वैकल्पिक संस्कृत प्राकृत-पंचम	1	40	संस्कृत प्राकृत मनीषी उत्तीर्ण
राष्ट्र भाषा-भूषण	वैकल्पिक हिन्दी-प्रथम	1	40	जो भी रूचिशील हो
राष्ट्र भाषा-कोविद	वैकल्पिक हिन्दी-द्वितीय	1	40	राष्ट्र भाषा भूषण उत्तीर्ण
राष्ट्र भाषा-विभाकर	वैकल्पिक हिन्दी-तृतीय	1	40	राष्ट्र भाषा कोविद उत्तीर्ण
राष्ट्र भाषा-मनीषी	वैकल्पिक हिन्दी-चतुर्थ	1	40	राष्ट्र भाषा विभाकर उत्तीर्ण
राष्ट्र भाषा-विशारद	वैकल्पिक हिन्दी-पंचम	1	40	राष्ट्र भाषा मनीषी उत्तीर्ण
जैन वाड्मय-सरोवर	आगम कंठस्थ-प्रथम	1	50	जो भी रूविशील हो
जैन वाड्मय-निर्झर	आगम कंठस्थ-द्वितीय	1	60	वाड्मय सरोवर उत्तीर्ण
जैन वाड्मय-वारिधि	आगम कंठस्थ-तृतीय	1	65	वाड्मय निर्झर उत्तीर्ण

संकेत-सूची

आगे दिये जा रहे पाठ्यक्रम में इन संकेतों का प्रयोग किया गया है, अत: इनका स्पष्टीकरण यहाँ दिया जा रहा है।

अनु	=	अनुवादक
अ.भा.सा.जैन संघ	=	अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
अ. भै. सेठिया जैन पार. संस्था	=	अगरचंद भैरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था
आ.	=	आचार्य
उपा.	=	उपाध्याय
क.	=	कर्त्ता (रचयिता)

प.	=	पंडित
पु.	=	पुस्तक
प्रका.	=	प्रकाशक
प्र.स.	=	प्रधान सम्पादक
ले.	=	लेखक
विवे.	=	विवेचक
व्या.	=	व्याख्याकार
सं.	=	सम्पादक
संक	=	संकलन कर्ता

जैन सिद्धान्त भूषण
(प्रारम्भिक परीक्षा-प्रथम)
(प्रथम पत्र)

क्र.	पुस्तक/अध्याय का नाम	लेखक/पुस्तक का नाम	प्रकाशक	अंक
1.	श्री दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 1 से 4 (भावार्थ)	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	40
2.	श्री दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 1 से 4 (कंठस्थ)		श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	30
3.	भक्तामर स्त्रोत (श्लोक कंठस्थ भावार्थ सहित)	अनु. उपा. अमर मुनि	सन्मति ज्ञान पीठ, आगरा	30
द्वितीय पत्र				
1.	जैन तत्त्व निर्णय भाग-1		श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	40
2.	पच्चीस बोल (परिभाषा, प्रश्नोत्तर, टिप्पणी आदि सहित सम्पर्ण कंठस्थ) परिशिष्ट परीक्षा में नहीं है	(तत्त्व का ताला ज्ञान की कुंजी भाग-1 या 4)	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	40
3.	समकित के 67 बोल		श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	20
तृतीय पत्र				
1.	5 समिति 3 गुप्ति का थोकड़ा-	तत्त्व का ताला ज्ञान की कुंजी भाग-1	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	20
2.	भिक्षा के 110 दोष-	तत्त्व का ताला ज्ञान की कुंजी भाग-1	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	20
3.	सूझता-असूझता व सचित्त अचित्त	श्रावक के 12 व्रत और चिन्तन परिषद का मैटर	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	15
4.	अस्वाध्यायिक	समता तत्व बो	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	10
5.	अमित गति-बत्तीसी		श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	15
6.	गहरी पर्त के हस्ताक्षर दि. 18-5-51 से 29-8-51	आचार्यश्री नानेश पु. नानेश वाणी	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	20
चतुर्थ पत्र				
1.	श्री साधुमार्गी परम्परा की गौरवशाली परम्परा के नौ आचार्य	श्रमणोपासक-स्वर्ण जयन्ति स्मारिका विशेषांक	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	40
2.	रत्नाकर पच्चीसी	जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग-5/ समता सुमन)	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	15

3.	कायोत्सर्ग के दोष	जिणधम्मो	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	15
4.	वन्दना के दोष	जिणधम्मो	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	15
5.	प्रत्याख्यानो व आगारों का स्वरूप	चिंतन परिषद का मैटर	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	15

जैन सिद्धान्त कोविद
(प्रारम्भिक परीक्षा-द्वितीय)

प्रथम पत्र

1.	श्री दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 5 से 10	दोनों चूलिकाएं (भावार्थ)	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	50
2.	श्री दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 9,10 व	दोनों चुलिकाएँ कंठस्थ	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	25
3.	आर्हत प्रवचन		अ. भै. सैठिया जैन पारमार्थिक संस्था बीकानेर	25

द्वितीय पत्र

1.	लघु दंडक परिभाषा, प्रश्नोत्तर, सहित सम्पूर्ण कंठस्थ	तत्व का ताला ज्ञान की कुंजी भाग-प्रथम	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	40
2.	गति आगति आ.श्री जवाहरलालजी म.सा.,	तत्त्व का ताला ज्ञान की कुंजी भाग-प्रथम	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	25
3.	गृहस्थ धर्म भाग-प्रथम	जवाहर किरणावली	जवाहर विद्यापीठ, भीनासर	35

तृतीय पत्र

1.	(अ) हिन्दी वर्णमाला, वर्तनी विराम चिह्न (ब) सामान्य वाक्य संबंधी अशुद्धियां एवं उनके संशोधन (स) स्वन्यात्मक द्विरूक्तिमूलक शब्द (द) मुहावरे व लोकोक्तियाँ	आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना ले. डॉ. वासु दंव नंदन प्रसाद,	प्रकाशक-भारतीय भवन, पटना	50
2.	गहरी पर्त के हस्ताक्षर (दि. 30.8.51 से 22.6.65)	आचार्य श्री नानेशवाणी भाग-40	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	20
3.	साधु की 32 उममाएँ	जिणधम्मो	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	15
4.	परम कल्याण के 40 बोल	जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग-7	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	15

चतुर्थ पत्र

1.	संस्कृत व्याकरण-वर्णमाला तथा वाक्य व्यवहार		राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम, नई दिल्ली	50
2.	धारणाएँ	समता तत्त्व बोध	श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर	
3.	तैंतीस बोल			

जैन सिद्धांत विभाकर
(प्रारम्भिक परीक्षा-तृतीय)

प्रथम पत्र

1.	श्री उत्तराध्ययन सूत्र 1से 20 (भावार्थ)	अनुवाद-घेवरचंद बांठिया	श्री अ.भै.सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर या अ. भा. सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, ब्यावर	60
2.	श्री उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 1,2,4,9,10, व 11 कंठस्थ	अनु. घेवरचंद बांठिया	श्री अ.भै.सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर या अ. भा. सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, ब्यावर	40

द्वितीय पत्र

1.	तत्त्वार्थ सूत्र (कंठस्थ)	अनु. अखिलेश मुनि	सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा 40
2.	तत्त्वार्थ सूत्र (भावार्थ)	अनु. अखिलेश मुनि	सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा 40
3.	कल्याण मन्दिर स्तोत्र श्लोक कंठस्थ तथा भावार्थ	अनुवाद अमर मुनि	सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा 20

तृतीय पत्र

1.	गृहस्थ धर्म भाग-2	लेखक-आचार्य श्री जवाहराचार्य जवाहर किरणावली	जवाहर विद्यापीठ, भीनासर 40
2.	कर्म विपाक का थोकडा	जब तक यह उपलब्ध न हो कर्मग्रन्थ भाग-1 (मरूधर केसरी) से पढ़ा जा सकता है।	40
3.	गहरी पर्त के हस्ताक्षर (दि. 23.6.65 से 20.3.67)	नानेशवाणी भाग-40	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर 20

चतुर्थ पत्र

1.	संस्कृत वाकय विस्तार		राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम् नई दिल्ली 25
2.	संस्कृत-संभाषणम्		राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम् नई दिल्ली 25
3.	श्रमण प्रतिक्रमण विधि सहित		चिन्तन परिषद् दुर्ग 30
4.	श्रमण प्रतिक्रमण के प्राकृत पाठों का अर्थ (आवश्यक सूत्र, प्रधान सम्पादक)	श्री मधुकर मुनिजी	आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर 20

जैन सिद्धान्त मनीषी

(प्रारम्भिक परीक्षा-चतुर्थ)

प्रथम पत्र

1.	श्री उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 21 से 36 भावार्थ	अनु. घेवरचंदजी बांठिया	श्री अ. भै. सेठिया जैन पार. संस्था, बीकानेर या श्री अ.भा. सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, ब्यावर 60
2.	श्री उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 26,29,32 व 35	कंठस्थ-अनु. घेवरचंद बांठिया	श्री अ.भै. सेठिया जैन पार. संस्था बीकानेर या श्री अ. भा. सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, ब्यावर 40

द्वितीय पत्र

1.	गुणस्थान स्वरूप	पु. तत्त्व का ताला भाग-1
2.	जीव धड़ा	पु. तत्त्व का ताला भाग-1
3.	98 का बोल बासठिया	पु. तत्त्व का ताला भाग-1

तृतीय पत्र

1.	बंध उदय का उदीरणा सता का थोकड़ा- (कर्म स्तोक मंजुषा भाग-1)		श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर 50
2.	गृहस्थ धर्म भाग-3	ले. आचार्य श्री जवाहराचार्य जवाहर किरणावली	जवाहर विद्यापीठ, भीनासार 30
3.	गहरी पर्त के हस्ताक्षर (दि. 21-3-67 से 22-6-69)	नानेशवाणी भाग-40	श्री अ.भा.सा.जैन संघ, बीकानेर 20

चतुर्थ पत्र

1.	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 1 से 50	ले. डॉ. कमल चन्द सिगाणी	अपभ्रंश सा. अका., जैन विद्या संस्थान दिग. जैन अतिशय क्षेत्र, श्री महावीरजी जीव	
2.	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 1 से 26	ले. डॉ. कमल चन्द सिगाणी	अपभ्रंश सा. अका., जैन विद्या संस्थान दिग. जैन अतिराय क्षेत्र, श्री महावीरजी	70
3.	पुच्छिस्सुणं (गाथा कंठस्थ, भावार्थ व्याकरणिक विश्लेषण परीक्षा में नहीं है।	वीरत्थुई (वीर स्तुति) अनु. तारा डागा	प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर	

जैन सिद्धांत विशारद
(प्रारम्भिक परीक्षा-पंचम)

प्रथम पत्र

1.	श्री आचारांग सूत्र, प्रथम अध्ययन, भावार्थ	प्र. सम्पादक : श्री मधुकर मुनिजी	आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर	25
2.	श्री आचारांग सूत्र, प्रथम अध्ययन, कंठस्थ	प्र. सम्पादक : श्री मधुकर मुनिजी	आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर	25
3.	श्री उपासकदशांग सूत्र अध्ययन, 1,2,7 भावार्थ	प्र. सम्पादक : श्री मधुकर मुनिजी	आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर	25
4.	श्री प्रश्न व्याकरण सूत्र संवरद्वार, भावार्थ	प्र. सम्पादक : श्री मधुकर मुनिजी	आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर	25

द्वितीय पत्र

1.	सद्धर्म मण्डनम्	मिथ्यात्व अनुकम्पा एवं दान अधिकार ले. आ. श्री जवाहरलालजी म.सा.	जवाहर विद्यापीठ, भीनासर	60
2.	अनुकम्पा विचार भाग-1 व 2	क. आ. श्री जवाहरमलजी म.सा.	जवाहर विद्यापीठ, भीनासर	40

तृतीय पत्र

1.	समीक्षण ध्यान : प्रयोग विधि	आचार्य श्री नानेशवाणी	श्री अ.भा. साधु. जैन संघ, बीकानेर	30
2.	102 बोल का बासठिया	तत्त्व का ताला भाग-1	श्री अ.भा. साधु.जैन संघ, बीकानेर	40
3.	गहरी पर्त के हस्ताक्षर दि. 28-6-69 से दिनांक 30.9.70	आचार्य श्री नानेश नानेशवाणी भाग- 40	श्री अ.भा. साधु. जैन संघ, बीकानेर	30

चतुर्थ पत्र

1.	प्राकृत रचना सौरभ (पाठ 51 से पूर्ण)	ले. डॉ. कमल चन्द्र सोगाणी	अपभ्रंश साहित्य अकादमी, श्री महावीरजी	90
2.	प्राकृत अभ्यास सौरभ (पाठ 27 से सम्पूर्ण)	ले. डॉ. कमल चन्द्र सोगाणी	अपभ्रंश साहित्य अकादमी, श्री महावीरजी	30
3.	पुच्छिस्सुणं (व्याकरणिक विश्लेषण सहित)	अनुवाद तारा डागा	प्राकृत भारती अकादमी	30

वैकल्पिक कंठस्थ परीक्षा
जैन आगम कंठस्थ भूषण
(वैकल्पिक कंठस्थ-प्रथम)

क्र.सं.	विषय	अंक
1.	दशवैकालिक सूत्र (चूलिका सहित) कंठस्थ	85
2.	पुच्छिस्सुणं कंठस्थ	10
3.	उववाई सूत्र की 22 गाथाएं कंठस्थ	5

जैन आगम कंठस्थ कोविद
(वैकल्पिक कंठस्थ द्वितीय)

1.	श्री उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 1 से 20 कंठस्थ	100

जैन आगम कंठस्थ विभाकर
(वैकल्पिक कंठस्थ-तृतीय)

1.	श्री उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 21 से 36 कंठस्थ	100

जैन आगम कंठस्थ मनीषी
(वैकल्पिक कंठस्थ-चतुर्थ)

1.	नंदी सूत्र, कंठस्थ	65
2.	सुख विपाक सूत्र कंठस्थ	10
3.	प्रश्न व्याकरण संवरद्वार कंठस्थ	25

जैन आगम कंठस्थ विशारद
(वैकल्पिक कंठस्थ-पंचम)

1.	आचारांग प्रथम श्रुत स्कंध कंठस्थ	70
2.	अंतगडसूत्र कंठस्थ, रतलाम	30

ज्ञातव्य-इन पाँचों में से एक वर्ष में एक ही पत्र दिया जा सकता है।

वैकल्पिक स्तोक परीक्षा

जैन स्तोक भूषण
(वैकल्पिक स्तोक-प्रथम)

1.	जैन स्तोक मंजूषा भाग-1	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर	50
2.	जैन स्तोक मंजूषा भाग-2	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर	50

जैन स्तोक कोविद
(वैकल्पिक स्तोक-द्वितीय)

1.	जैन स्तोक मंजूषा भाग-1व 2	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर	20
2.	जैन स्तोक मंजूषा भाग 3	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर	40
3.	जैन स्तोक मंजूषा भाग 4	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर	40

जैन स्तोक विभाकर
(वैकल्पिक स्तोक-तृतीय)

1.	जैन स्तोक मंजूषा भाग-3व 4	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर	20
2.	जैन स्तोक मंजूषा भाग-5	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर	40
3.	जैन स्तोक मंजूषा भाग-6	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर	40

जैन स्तोक मनीषी
(वैकल्पिक स्तोक-चतुर्थ)

1.	जैन स्तोक मंजूषा भाग-5व 6	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर	20
2.	जैन स्तोक मंजूषा भाग-7	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर	40
3.	जैन स्तोक मंजूषा भाग-8	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर	40

जैन स्तोक विशारद

(वैकल्पिक स्तोक-पंचम)

1.	जैन स्तोक मंजूषा भाग-7-8	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर	20
2.	जैन स्तोक मंजूषा भाग-9	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर	40
3.	जैन स्तोक मंजूषा भाग-10	श्री अ.भा.साधु. जैन संघ, बीकानेर	40

(इन पाँचों में से एक वर्ष में एक पत्र ही दिया जा सकता है।)

वैकल्पिक संस्कृत प्राकृत परीक्षा

जैन संस्कृत प्राकृत-भूषण

(वैकल्पिक संस्कृत प्राकृत-प्रथम)

विषय	अंक
1. वर्णमाला	100
2. वाक्यव्यवहार	100
3. वाक्यविस्तरः	100
4. सम्भाषणम्	100
5. परिशिष्टम्	100

संस्कृत स्वाध्याय Teach Your Self Sanskrit के अन्तर्गत प्रथम दीक्षा

जैन संस्कृत प्राकृत-विभाकर

(वैकल्पिक संस्कृत प्राकृत तृतीय)

1. रचनानुवाद कौमुदी (1 से 30 पाठ)	50
2. प्राकृत रचना सौरभ (1 से 50 पाठ) व	
3. प्राकृत अभ्यास सौरभ (1 से 26 पाठ)	50

विषय	अंक
1. व्यवहार प्रदीप (प्रथम भाग)	100
2. व्यवहार प्रदीप (द्वितीय भाग)	100
3. परिशिष्टम्	100

संस्कृतं स्वाध्याय Teach Your Self Sanskrit

द्वितीय दीक्षा

जैन संस्कृत प्राकृत-मनीषी

(वैकल्पिक संस्कृत प्राकृत-चतुर्थ)

विषय	**अंक**
1. रचनानुवाद कौमुदी (31 से 80 पाठ)	50
2. प्राकृत रचना सौरभ (पूर्व) व	
3. प्राकृत अभ्यास सौरभ (पूर्व)	50

जैन संस्कृत प्राकृत-विशारद

(वैकल्पिक संस्कृत-प्राकृत पंचम)

1.	भर्तृहरि-नीतिशतकम् (पूर्वार्द्धम)	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्, नई देहली	35
2.	भक्तामर स्तोत्र (व्याकरणिक विश्लेषण सहित)	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्, नई देहली	35
3.	दशवैकालिक चयनिका	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्, नई देहली	30

इन पाँचों में से एक वर्ष में एक पत्र ही दिया जा सकता है।

पाठ्यपुस्तकें (जैन संस्कृत प्राकृत-भूषण)

(1-5) वर्णमाला, वाक्य व्यवहार : वाक्य विस्तरः, सम्भाषणम् और परिशिष्टम्

(Teach Your self Sanskrit) के अन्तर्गत प्रथमा दीक्षा

जैन संस्कृत प्राकृत-कोविद

1.	व्यवहार प्रदीप : प्रथम भाग	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम-नई देहली
	व्यवहार प्रदीप : द्वितीय भाग	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम-नई देहली
	परिशिष्टम्	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम-नई देहली

संस्कृत-स्वाध्याय (Teach Your self Sanskrit) के अन्तर्गत द्वितीया दीक्षा

जैन संस्कृत प्राकृत विभाकर

1.	रचनानुवाद कौमुदी	ले. डॉ. कपिल देव त्रिवेदी	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2.	प्राकृत रचना सौरभ	ले. डॉ. कमल चन्द्र सोगाणी	अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जैन विद्या संस्थान दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, श्री महावीरजी
3.	प्राकृत अभ्यास सौरभ	ले. डॉ. कमल चन्द्र सोगाणी	अपभ्रंश साहित्य अकादमी जैन विद्या संस्थान दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, श्री महावीरजी

जैन संस्कृत प्राकृत मनीषी

1	रचनानुवाद कौमुदी/पूर्ववत्	ले. डॉ. कपिल देव त्रिवेदी	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2.	प्राकृत रचना सौरभ	ले. डॉ. कमल चन्द्र सोगाणी	अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जैन विद्या संस्थान दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, श्री महावीरजी
3.	प्राकृत अभ्यास सौरभ	ले. डॉ. कमल चन्द्र सागाणी	अपभ्रंश सा.अकादमी, जैनविद्या संस्थान दि. जैन अतिशय क्षेत्र, श्री महावीरजी

जैन संस्कृत प्राकृत विशारद

1.	भर्तृहरि नीति शतकम् (पूर्वाद्धम्) संस्कृत स्वाध्याय (चतुर्थी दीक्षा)		राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम् नई देहली
2.	भक्तामर स्तोत्र (व्याकरणिक विश्लेषण सहित)		
3.	दशवैकालिक	चयनिका डॉ. कमल चन्द्र सोगाणी	प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर

वैकल्पिक हिन्दी परीक्षा

राष्ट्र भाषा भूषण

(वैकल्पिक हिन्दी-प्रथम)

1.	आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना (अध्याय 1 से 9)	लेखक डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद	भारती भवन, पटना	100

राष्ट्र भाषा कोविद

(वैकल्पिक हिन्दी-द्वितीय)

1.	आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना (अध्याय 10 से 22)	ले. डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद	भारती भवन, पाटना	100

राष्ट्र भाषा-विभाकर

(वैकल्पिक हिन्दी-तृतीय)

1.	अच्छी हिन्दी प्रकरण (1 से 8)	ले. रामचन्द्र वर्मा	लोक भारती प्रकाशन	100

राष्ट्र भाषा-मनीषी

(वैकल्पिक हिन्दी-चतुर्थ)

1.	अच्छी हिन्दी (प्रकरण 9-16)	ले.रामचन्द्र वर्मा	लोक भारती प्रकाशन	70
2.	पूज्याचार्य	ले. माणक चंद जी रामपुरिया	कलासन प्रकाशन, बीकानेर	30

राष्ट्र भाषा विशारद

(वैकल्पिक हिन्दी-पंचम)

1.	जयदथ वध	ले. राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त	45
2.	गद्य-पद्य संग्रह-कक्षा-11	माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान	35
3.	हिन्दी में कविता रचना निबंध लेखन आदि जब तक पठित विषयों के ज्ञान एवं स्वानुभव के आधार पर		20

32 आगम कंठस्थ परीक्षा

जैन वाङ्मय सरोवर

(32 आगम कंठस्थ-प्रथम चरण)

1. श्री आवश्यक सूत्र, श्री दशवैकालिक सूत्र, श्री उत्तराध्ययन सूत्र, श्री नन्दी सूत्र, श्री अनुतरौपयातिक सूत्र, श्री विपाक सूत्र, श्री निरयावलिका सूत्र पंचक, श्री आचारांग सूत्र, श्री दशाश्रुत स्कंध श्री प्रश्न व्याकरण सूत्र, कंठस्थ

जैन वाङ्मय निर्झर

(32 आगम कंठस्थ-द्वितीय चरण)

1. श्री अनुयोगद्वार सूत्र, श्री औपपातिक सूत्र, श्री राजप्रश्नीय सूत्र, श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र, श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र, श्री सूत्रकृतांग सूत्र, श्री स्थानांग सूत्र, श्री समवायांग सूत्र, श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र-कंठस्थ
2. 'जैन वाङ्मय सरोवर' परीक्षा में कंठस्थ किए हुए सारे आगम

जैन वाङ्मय वारिधि

(32 आगम कंठस्थ-तृतीय चरण)

1. श्री प्रज्ञापना सूत्र, श्री व्यवहार सूत्र, श्री निशीथ सूत्र, श्री भगवती सूत्र-कंठस्थ
2. 'जैन वाङ्मय सरोवर' परीक्षा में कंठस्थ किए हुए आगम
3. 'जैन वाङ्मय निर्झर' परीक्षा में कंठस्थ किए हुए आगम

+ इन तीनों परीक्षाओं की व्यवस्था विद्यार्थी की सूचना के आधार पर की जा सकेगी इसकी कोई निश्चित कालावधि नहीं है। विद्यार्थी को परीक्षा में रहे हुए आगम कंठस्थ हो तथा वह जब परीक्षा देना चाहे, कम से कम उसके दो/डेढ़ माह पूर्व परीक्षा बोर्ड को सूचित कर सकता है।

वर्गीकृत परीक्षाओं संबंधी विशेष नियम

1. वर्गीकृत विषयों की परीक्षाओं में से एक विद्यार्थी द्वारा एक साथ अधिक से अधिक दो विषयों को ही लिया जा सकता है।
2. वर्गीकृत विषय के प्रत्येक परीक्षार्थी को महावीर जयन्ती तक अपना आवेदन पत्र (From) भेजना आवश्यक है।
3. जिन्होंने पुराने पाठ्यक्रमों से विशारद (द्वितीय खण्ड) या शास्त्री या रत्नाकर परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है या इस नये पाठ्यक्रम से भविष्य में विशारद उत्तीर्ण कर लेंगे, वे वर्गीकृत परीक्षाओं में प्रवेश ले सकते हैं।
4. केवल वर्गीकृत कंठस्थ परीक्षा प्रारंभ से ही दी जा सकती है, इसके लिए विशारद या अन्य कोई भी परीक्षा उत्तीर्ण करने की आवश्यकता नहीं है।
5. जो विद्यार्थी भविष्य में 'संस्कृत प्राकृत' संबंधी वर्गीकृत लेने के इच्छुक हैं, उनके लिए परामर्श है कि वे उसके पूर्व संस्कृत प्राकृत की वैकल्पिक परीक्षाएं उत्तीर्ण कर लें।
6. जो परीक्षार्थी अभी 'जैन आगम' वर्गीकृत विषय की परीक्षाएं दे रहे हैं, वे नये पाठ्यक्रम के लागू होने के बाद 'वर्गीकृत द्रव्यानुयोग परीक्षा' के ही समान स्तर में प्रवेश पा सकते हैं।

7. 'वर्गीकृत चरणकरणानुयोग' व .....धर्म .....व 'वर्गीकृत धर्म कथानुयोग की परीक्षा प्रारम्भ (शास्त्री) से ही दी जा सकती है।
8. जिन्होंने पुराने पाठ्यक्रम से रत्नाकर उत्तीर्ण कर ली है या इस नये पाठ्यक्रम से भविष्य में निष्णात परीक्षा उत्तीर्ण कर लेंगे, वे 'जैन सत्यार्थ गवेषक' में प्रवेश ले सकते हैं।
9. इन परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र पर्याप्त कठिनता लिए हुए हों-ऐसा लक्ष्य है ताकि इन्हें उत्तीर्ण करने वाला विद्यार्थी अपने विषय में वास्तविक पारंगतता एवं अधिकार हासिल कर सकें, एतदर्थ विद्यार्थियों को इसके लिए पूर्व से तैयार रहना चाहिए।

वर्गीकृत-परीक्षाएँ

परीक्षा का नाम	संक्षिप्त नाम	पत्र	उत्तीर्ण प्रतिशत	योग्यता
जैन आगम कंठस्थ शास्त्री	वर्गीकृत कंठस्थ-प्रथम	2	50	जो भी रूचिशील हो
जैन आगम कंठस्थ विचक्षण	वर्गीकृत कंठस्थ-द्वितीय	2	55	जैन आगम कंठस्थ शास्त्री उत्तीर्ण
जैन आगम कंठस्थ विपश्चित्	वर्गीकृत कंठस्थ-तृतीय	2	60	जैन आगम कंठस्थ विचक्षण उत्तीर्ण
जैन आगम कंठस्थ तत्त्वज्ञ	वर्गीकृत कंठस्थ-चतुर्थ	2	65	जैन आगम कंठस्थ विपश्चित् उत्तीर्ण
जैन आगम कंठस्थ निष्णात	वर्गीकृत कंठस्थ-पंचम	1	50	जैन आगम कंठस्थ तत्त्वज्ञ उत्तीर्ण
जैन द्रव्यानुयोग शास्त्री	वर्गीकृत द्रव्यानुयोग-प्रथम	2	50	जैन सिद्धान्त विशारद उत्तीर्ण
जैन द्रव्यानुयोग विचक्षण	वर्गीकृत द्रव्यानुयोग-द्वितीय	2	55	जैन द्रव्यानुयोग शास्त्री उत्तीर्ण
जैन द्रव्यानुयोग विपश्चित्	वर्गीकृत द्रव्यानुयोग-तृतीय	2	60	जैन द्रव्यानुयोग विचक्षण उत्तीर्ण
जैन द्रव्यानुयोग तत्त्वज्ञ	वर्गीकृत द्रव्यानुयोग-चतुर्थ	2	65	जैन द्रव्यानुयोग विपश्चित् उत्तीर्ण
जैन द्रव्यानुयोग निष्णात	वर्गीकृत द्रव्यानुयोग-पंचम	2	50	जैन द्रव्यानुयोग तत्त्वज्ञ उत्तीर्ण
जैन चरणकरणानुयोग शास्त्री	वर्गीकृत चरणकरणानुयोग-प्रथम	2	50	जैन सिद्धान्त विशारद उत्तीर्ण
जैन चरणकरणानुयोग शास्त्री	वर्गीकृत चरणकरणा.-द्वितीय	2	55	जैन चरणकरणानुयोग शास्त्री उत्तीर्ण
जैन चरणकरणानुयोग विपश्चित	वर्गीकृत चरणकरणा. तृतीय	2	60	जैन चरणकरणानुयोग विचक्षण उत्तीर्ण
जैन चरणकरणानुयोग तत्त्वज्ञ	वर्गीकृत चरणकरणा. चतुर्थ	2	65	जैन चरणकरणानुयोग विपश्चित् उत्तीर्ण
जैन चरणकरणानुयोग निष्णात	वर्गीकृत चरणकरणा. पंचम	1	50	जैन चरणकरणानुयोग तत्त्वज्ञ उत्तीर्ण
जैन इतिहास शास्त्री	वर्गीकृत इतिहास प्रथम	2	50	जैन सिद्धांत विशारद उत्तीर्ण
जैन इतिहास विचक्षण	वर्गीकृत इतिहास द्वितीय	2	55	जैन सिद्धांत शास्त्री उत्तीर्ण
जैन इतिहास विपश्चित्	वर्गीकृत इतिहास तृतीय	2	60	जैन सिद्धांत विचक्षण उत्तीर्ण
जैन इतिहास तत्वज्ञ	वर्गीकृत इतिहास चतुर्थ	2	65	जैन सिद्धांत विपश्चित उत्तीर्ण
जैन इतिहास निष्णात	वर्गीकृत इतिहास पंचम	2	65	जैन सिद्धांत तत्वज्ञ उत्तीर्ण
जैन योग ध्यान अध्यात्मशास्त्री	वर्गीकृत अध्यात्म प्रथम	2	50	जैन सिद्धांत विशारद उत्तीर्ण
जैन योग ध्यान अध्यात्मविचक्षण	वर्गीकृत अध्यात्म द्वितीय	2	55	जैन योग ध्यान अध्यात्मशास्त्री उत्तीर्ण
जैन योग ध्यान अध्यात्मविपश्चित्	वर्गीकृत अध्यात्म तृतीय	2	60	जैन योग ध्यान अध्यात्मविचक्षण उत्तीर्ण
जैन योग ध्यान अध्यात्म तत्वज्ञ	वर्गीकृत अध्यात्म चतुर्थ	2	65	जैन योग ध्यान अध्यात्मविपश्चित उत्तीर्ण
जैन योग ध्यान अध्यात्मनिष्णात	वर्गीकृत अध्यात्म पंचम	2	50	जैन योग ध्यान अध्यात्मतत्व उत्तीर्ण
जैन कर्म सिद्धांत शास्त्री	वर्गीकृत कर्म प्रथम	2	50	जैन कर्म सिद्धांत विशारद उत्तीर्ण
जैन कर्म सिद्धांत विचक्षण	वर्गीकृत कर्म द्वितीय	2	55	जैन कर्म सिद्धांत शास्त्री उत्तीर्ण
जैन कर्म सिद्धांत विपश्चित	वर्गीकृत कर्म तृतीय	2	60	जैन सिद्धांत विचक्षण उत्तीर्ण
जैन कर्म सिद्धांत तत्वज्ञ	वर्गीकृत कर्म चतुर्थ	2	65	जैन सिद्धांत विपश्चित उत्तीर्ण
जैन कर्म सिद्धांत निष्णात	वर्गीकृत कर्म पंचम	2	50	जैन सिद्धांत तत्त्वज्ञ उत्तीर्ण

जैन प्राकृत शास्त्री	वर्गीकृत प्राकृत-प्रथम	2	50	जैन सिद्धान्त विशारद उत्तीर्ण
जैन प्राकृत विचक्षण	वर्गीकृत प्राकृत-द्वितीय	2	55	जैन प्राकृत शास्त्री उत्तीर्ण
जैन प्राकृत विपिश्चित्	वर्गीकृत प्राकृत-तृतीय	2	60	जैन प्राकृत विचक्षण उत्तीर्ण
जैन प्राकृत तत्त्वज्ञ	वर्गीकृत प्राकृत-चतुर्थ	2	65	जैन प्राकृत विपिश्चित् उत्तीर्ण
जैन प्राकृत निष्णात	वर्गीकृत प्राकृत-पंचम	1	50	जैन प्राकृत तत्त्वज्ञ उत्तीर्ण
जैन संस्कृत शास्त्री	वर्गीकृत संस्कृत-प्रथम	2	50	जैन सिद्धान्त विशारद उत्तीर्ण
जैन संस्कृत विचक्षण	वर्गीकृत संस्कृत-द्वितीय	2	55	जैन संस्कृत शास्त्री उत्तीर्ण
जैन संस्कृत विपश्चित्	वर्गीकृत संस्कृत-तृतीय	2	60	जैन संस्कृत विचक्षण उत्तीर्ण
जैन संस्कृत तत्त्वज्ञ	वर्गीकृत संस्कृत-चतुर्थ	2	65	जैन संस्कृत विपश्चित् उत्तीर्ण
जैन संस्कृत निष्णात	वर्गीकृत संस्कृत-पंचम	1	50	जैन संस्कृत तत्त्वज्ञ उत्तीर्ण
जैन स्तोक शास्त्री	वर्गीकृत स्तोक-प्रथम	2	50	जैन सिद्धान्त स्तोक विशारद उत्तीर्ण
जैन स्तोक विचक्षण	वर्गीकृत स्तोक-द्वितीय	2	65	जैन सिद्धान्त स्तोक शास्त्री उत्तीर्ण
जैन स्तोक विपश्चित्	वर्गीकृत स्तोक-तृतीय	2	60	जैन सिद्धान्त स्तोक विचक्षण उत्तीर्ण
जैन स्तोक तत्त्वज्ञ	वर्गीकृत स्तोक-चतुर्थ	2	65	जैन सिद्धान्त स्तोक विचक्षण उत्तीर्ण
जैन स्तोक निष्णात	वर्गीकृत स्तोक-पंचम	1	50	जैन सिद्धान्त स्तोक तत्त्वज्ञ उत्तीर्ण
जैन दर्शन शास्त्री	वर्गीकृत दर्शन प्रथम	2	50	जैन सिद्धान्त विशारद उत्तीर्ण
जैन दर्शन विचक्षण	वर्गीकृत दर्शन द्वितीय	2	55	जैन दर्शन शास्त्री उत्तीर्ण
जैन दर्शन विपश्चित	वर्गीकृत दर्शन तृतीय	2	60	जैन दर्शन विचक्षण उत्तीर्ण
जैन दर्शन तत्त्वज्ञ	वर्गीकृत दर्शन चतुर्थ	2	65	जैन दर्शन विपश्चित् उत्तीर्ण
जैन दर्शन निष्णात	वर्गीकृत दर्शन पंचम	1	50	जैन दर्शन तत्त्वज्ञ उत्तीर्ण
जैन धर्मकथानुयोग शास्त्री	वर्गीकृत धर्मकथानुयोग प्रथम	2	50	जैन सिद्धान्त विशारद उत्तीर्ण
जैन धर्मकथानुयोग विचक्षण	वर्गीकृत धर्मकथानुयोग द्वितीय	2	55	जैन धर्मकथानुयोग शास्त्री उत्तीर्ण
जैन धर्मकथानुयोग विपश्चित्	वर्गीकृत धर्मकथानुयोग तृतीय	2	60	जैन धर्मकथानुयोग विचक्षण उत्तीर्ण
जैन धर्मकथानुयोग तत्त्वज्ञ	वर्गीकृत धर्मकथानुयोग चतुर्थ	2	65	जैन धर्मकथानुयोग विपश्चित उत्तीर्ण
जैन धर्मकथानुयोग निष्णात	वर्गीकृत धर्मकथानुयोग पंचम	1	50	जैन धर्मकथानुयोग तत्त्वज्ञ उत्तीर्ण
जैन सत्यार्थ गवेषक	शोध परीक्षा	1		निष्णात परीक्षा उत्तीर्ण या पुराने पाठ्यक्रम से रत्नाकर परीक्षा उत्तीर्ण

वर्गीकृत कंठस्थ परीक्षा

जैन आगम कंठस्थ शास्त्री

वर्गीकृत कंठस्थ-प्रथम

प्रथम-पत्र

1. दशवैकालिक सूत्र (चूलिका सहित) 80
2. श्री सुखविपाक सूत्र कंठस्थ 20

द्वितीय-पत्र

1. श्री नंदीसूत्र कंठस्थ 80
2. श्री अनुतरोपतिक सूत्र कंठस्थ 20

जैन आगम कंठस्थ विचक्षण

(वर्गीकृत कंठस्थ द्वितीय)

प्रथम-पत्र

1. श्री उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 1-36 कंठस्थ

द्वितीय-पत्र

1. दशाश्रुत स्कंध सूत्र कंठस्थ 50
2. श्री जैन आगम कंठस्थ शास्त्री में कंठस्थ किए गए आगम 50

जैन आगम कंठस्थ विपश्चित्

(वर्गीकृत कंठस्थ तृतीय)

प्रथम-पत्र

1. श्री आचारांग सूत्र, प्रथम श्रुतस्कंध, कंठस्थ 80
2. श्री आचारांग सूत्र, द्वितीय श्रुतस्कंध, प्रथम व द्वितीय अध्ययन कंठस्थ 20

द्वितीय-पत्र

1. श्री बृहत्कल्प सूत्र कंठस्थ 25
2. जैन आगम कंठस्थ शास्त्री में कंठस्थ किये गये हुए आगम
3. जैन आगम कंठस्थ विचक्षण में कंठस्थ किये हुए आगम 75

जैन आगम कंठस्थ तत्त्वज्ञ

(वर्गीकृत कंठस्थ चतुर्थ)

प्रथम-पत्र

1. श्री आचारांग सूत्र, द्वितीय श्रुत स्कंध अध्ययन 3-16 कंठस्थ 70
2. श्री व्यवहार सूत्र कंठस्थ 30

द्वितीय-पत्र

1. श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र, संवर द्वार कंठस्थ 20
2. जैन आगम कंठस्थ शास्त्री में कंठस्थ किये हुए आगम
3. जैन आगम कंठस्थ विचक्षण में कंठस्थ किये हुए आगम 80
4. जैन आगम कंठस्थ विपश्चित् में कंठस्थ किये हुए आगम

जैन आगम कंठस्थ निष्णात

(वर्गीकृत कंठस्थ पंचम)

निष्णात परीक्षा संबंधी नियमावली देखें।

वर्गीकृत द्रव्यानुयोग परीक्षा

जैन द्रव्यानुयोग शास्त्री (वर्गीकृत द्रव्यानुयोग प्रथम)

प्रथम-पत्र

1.	प्रज्ञापना सूत्र, भाग-1 पद-1-9		100
	पाठ्यपुस्तकें : प्रथम व द्वितीय पत्र	प्रधान सम्पादक श्री मधुकर मुनिजी	

द्वितीय-पत्र

1.	प्रज्ञापना सूत्र, भाग-1 पद-10-22		100
	पाठ्यपुस्तकें : प्रथम व द्वितीय पत्र	प्रधान सम्पादक श्री मधुकर मुनिजी	

जैन द्रव्यानुयोग विचक्षण (वर्गीकृत द्रव्यानुयोग द्वितीय)

प्रथम-पत्र

1.	प्रज्ञापना सूत्र, भाग-3 (पद 23-36)	प्रधान सम्पादक श्री मधुकर मुनिजी	40
2.	जीव-जीवाभिगम सूत्र (भाग-प्रथम)		60

द्वितीय-पत्र

1.	स्थानांग सूत्र, (स्थान 1 से 4)		70
2.	जीवा-जीवभिगम सूत्र (भाग-2)		30

जैन द्रव्यानुयोग विपश्चित

(वर्गीकृत द्रव्यानुयोग तृतीय)

प्रथम-पत्र

1.	व्याख्या प्रज्ञप्ति सूत्र भाग-प्रथम (शतक 1 से 5)		60
2.	स्थानांग सूत्र (स्थान 5 से 10)	प्रधान सम्पादक श्री मधुकर मुनिजी	40

द्वितीय-पत्र

1.	व्याख्या प्रज्ञप्ति सूत्र, भाग-द्वितीय (शतक 6 से 10)		80
2.	नंदी सूत्र	प्रधान सम्पादक श्री मधुकर मुनिजी	20

जैन द्रव्यानुयोग तत्त्वज्ञ

(वर्गीकृत द्रव्यानुयोग-चतुर्थ)

प्रथम-पत्र

1.	व्याख्या प्रज्ञप्ति सूत्र भाग-3 (शतक 11-19)	प्रधान सम्पादक श्री मधुकर मुनिजी	100

द्वितीय-पत्र

1.	व्याख्या प्रज्ञप्ति सूत्र भाग-4 (शतक 20-41)	प्रधान सम्पादक श्री मधुकर मुनिजी	100

जैन द्रव्यानुयोग निष्णात

(वर्गीकृत द्रव्यानुयोग पंचम)

'निष्णात' परीक्षा संबंधी नियमावली देखें।

वर्गीकृत चरणकरणानुयोग परीक्षा

जैन चरणकरणानुयोग शास्त्री

(वर्गीकृत चरणकरणानुयोग-प्रथम)

प्रथम-पत्र

1.	दशवैकालिक सूत्र	प्रधान सम्पादक श्री मधुकर मुनिजी	80

2.	चउसरणपइण्णयं	आगम, अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर	20

द्वितीय-पत्र

1.	उत्तराध्ययन सूत्र (अध्ययन 1,2,3,11,15 ,16,17,24,26, 29,30,31,32 एवं 35)	प्रधान सम्पादक श्री मधुकर मुनिजी	80
2.	संथारगपइण्णयं	आगम, अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर	20

जैन चरणकरणानुयोग विचक्षण

(वर्गीकृत चरणकरणानुयोग-द्वितीय)

प्रथम-पत्र

1.	ज्ञाता धर्मकथांग सूत्र		50
2.	आवश्यक सूत्र		30
3.	महापच्चक्खाणपइण्णयं	आगम, अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर	20

जैन चरणकरणानुयोग विपश्चित्

(वर्गीकृत चरणकरणानुयोग-तृतीय)

प्रथम-पत्र

1.	सूत्रकृतांग (द्वितीय श्रुतस्कंध 3,4 व 7 अध्ययन)	प्रधान सम्पादक श्री मधुकर मुनिजी	45
2.	प्रश्न व्याकरण सूत्र (संवर द्वार)	प्रधान सम्पादक श्री मधुकर मुनिजी	30
3.	दीक्षा कुमारी का प्रवास	प्रधान सम्पादक श्री मधुकर मुनिजी सम्यग्ज्ञान प्रचार मण्डल, जयपुर	25

द्वितीय-पत्र

1.	पिंड निर्युक्ति (हिन्दी अनुवाद) व कथाएँ, पृष्ठ 109-203	प्र.सं. आचार्य श्री महाप्रज्ञजी स. श्रमणी कुसुमप्रज्ञाजी जैन विश्वभारती लाडनू	50
2.	दशाश्रुत स्कंध सूत्र	प्र.सं. श्री मधुकरमुनिजी म.सा.	50

जैन चरणकरणानुयोग तत्त्वज्ञ

(वर्गीकृत चरणकरणानुयोग-चतुर्थ)

प्रथम-पत्र

1.	बृहत्कल्प सूत्र	पु. त्रीणि छेद सूत्राणि/प्र.सं. श्री मधुकर मुनिजी	45
2.	व्यवहार सूत्र	पु. त्रीणि छेद सूत्राणि/प्र.सं. श्री मधुकर मुनिजी	55

द्वितीय-पत्र

1.	सामाचारी (बड़ी सामाचारी)	समाचारी (हस्तलिखित)	100

जैन चरणकरणानुयोग निष्णात

(वर्गीकृत चरणकरणानुयोग-पंचम)

निष्णात परीक्षा संबंधी नियमावली देखें।

वर्गीकृत इतिहास परीक्षा

जैन इतिहास शास्त्री

(वर्गीकृत इतिहास प्रथम)

प्रथम-पत्र

1.	अपश्चिम तीर्थंकर-भगवान महावीर भाग-1	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	50
2.	अपश्चिम तीर्थंकर-भगवान महावीर भाग-2	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	50

द्वितीय-पत्र

1.	अद्‌भूत योगी	आ. श्री श्रीलाल जी म.सा. का जीवन चरित्र	श्री अ.भा.साधुमार्गी जेन संघ, बीकानेर	50
2.	ज्योर्तिधर	श्री इन्द्रचन्दजी शास्त्री आ.श्री जवाहरमलजी म.सा. का जीवन चरित्र)	जवाहर विद्यापीठ, भीनासर	50

जैन इतिहास विचक्षण

(जैन इतिहास द्वितीय)

प्रथम-पत्र

1.	आ. श्री गणेशलालजी म.सा. का जीवन चरित्र	देवकुमार जैन	श्री अ.भा.साधुमार्गी जेन संघ, बीकानेर	50
2.	अन्तर्पथ के यात्री	आचार्यश्री नानेश	श्री अ.भा.साधुमार्गी जेन संघ, बीकानेर	50

द्वितीय-पत्र

1.	साधुमार्गी की पावन सरिता		श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	80
2.	धर्ममूर्ति आनन्द कुमारी	ले. मुनि नेमीचंदजी	मीठालाल अमरचन्द लोढ़ा, ब्यावर	20

जैन इतिहास विपश्चित्

(वर्गीकृत इतिहास तृतीय)

प्रथम-पत्र

1.	जेन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1	आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.	सम्यग्ज्ञान प्रचार मण्डल, जयपुर	100

द्वितीय पत्र

1.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-2	आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.	सम्यग्ज्ञान प्रचार मण्डल, जयपुर	100

जैन इतिहास तत्त्वज्ञ

(वर्गीकृत इतिहास चतुर्थ)

1.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-3	आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.	सम्यग्ज्ञान प्रचार मण्डल, जयपुर	100

द्वितीय-पत्र

1.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-4	आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.	सम्यग्ज्ञान प्रचार मण्डल, जयपुर	100

जैन इतिहास निष्णात

(वर्गीकृत इतिहास पंचम)

निष्णात परीक्षा संबंधी नियमावली देखें।

वर्गीकृत अध्यात्म परीक्षा

जैन योगध्यान अध्यात्म शास्त्री

(वर्गीकृत अध्यात्म प्रथम)

प्रथम पत्र

1.	आत्म समीक्षण	आचार्य श्री नानेश	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	40
2.	कषाय समीक्षण	आचार्य श्री नानेश	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	35
3.	समीक्षण ध्यान : प्रयोगविधि	आचार्य श्री नानेश	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	25

द्वितीय पत्र

1.	आचारांग सूत्र (प्रथम श्रुतस्कंध)	श्री मधुकर मुनिजी	आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर	100

जैन योगध्यान अध्यात्म विचक्षण
(वर्गीकृत अध्यात्म द्वितीय)

प्रथम-पत्र

1.	शांत सुधारस	अनु. पू. आ. श्री भद्रगुप्त सूरिजी	श्री विश्वकल्याण प्रकाशन ट्रस्ट, महेसाणा	50
2.	जैन आगमों में अष्टांग योग	ले. आचार्यश्री आत्मारामजी म.सा.	प्रज्ञाध्यान स्वाध्याय केन्द्र पूणे	50

द्वितीय पत्र

1.	उत्तराध्ययन सूत्र (32वां अध्ययन)	प्र.सं. श्री मधुकर मुनिजी म.सा.	आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर	20
2.	ज्ञान सार (अनुवाद सहित)	आचार्यश्री यशोविजय अनु. विवे. श्री पू. आचार्यश्री भद्रगुप्त सूरिजी	श्रीविश्व कल्याण प्रकाशन ट्रस्ट, मेहसाणा अथवा कोबा अहमदाबाद	80

जैन योगध्यान अध्यात्म विपश्चित्
(वर्गीकृत अध्यात्म तृतीय)

प्रथम-पत्र

1.	प्रशम रति	क. उमा स्वाति/विवेचक-भद्र गुप्त सूरिजी	विश्व कल्याण प्रकाशन ट्रस्ट, मेहसाणा या महावीर आराधना केन्द्र कोबा	100

द्वितीय पत्र

1.	जैन योग ग्रंथ चतुष्टय	आ.हरिभद्र/सं. साध्वी उमरवि कुंवरजी	मुनि हजारीमल स्मृति प्रकाशन, ब्यावर	30
2.	जैन योग के सात ग्रन्थ	अनु. सं. मुनि दुलहराजी	जैन विश्व भारती लाडनूं	40
3.	उत्तराध्ययन सूत्र 29 में अध्ययन	प्र.सं. श्री मधुकरमुनिजी		30

जैन योगध्यान अध्यात्म तत्त्वज्ञ
(वर्गीकृत अध्यात्म चतुर्थ)

प्रथम-पत्र

1.	गहरी पर्त के हस्ताक्षर	आचार्य श्री नानेश, नानेशवाणी भाग-40	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	50
2.	अध्यात्म कल्पद्रुमसार (अनुवाद सहित)	क.मुनि सुंदर सूरि/ प. हरीशचन्द्र धारीवाल	श्री जिन दत्त सूरि मंडल, अजमेर	50

द्वितीय पत्र

1.	ज्ञानार्णव (अनुवाद सहित)	क. आचार्यश्री शुभचन्द्र	श्री परमदत्त प्रभावक मंडल, श्री मद्राजचंद्र आश्रम आगास	100

जैन योगध्यान अध्यात्म निष्णात
(वर्गीकृत अध्यात्म पंचम)

निष्णात परीक्षा संबंधी नियमावली देखें।

वर्गीकृत कर्म परीक्षा
जैन कर्म सिद्धान्त शास्त्री
(वर्गीकृत कर्म-प्रथम)

प्रथम-पत्र

1.	कर्म विपाक का थोकड़ा	(जब तक यह उपलब्ध न हो तब तक कर्मग्रन्थ भाग-1 से पढ़ा जा सकता है)	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	35
2.	बंध, उदय, उदीरणा एवं सत्ता का थोकड़ा			

		कर्म स्तोक मंजूषा	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	30
3.	क्षयोपशम का थोकड़ा		श्री मरुधर केसरी साहित्य प्रकाशन समिति, ब्यावर	35

द्वितीय पत्र

1.	बंध स्वामित्व का थोकड़ा		श्री मरुधर केसरी साहित्य प्रकाशन समिति, ब्यावर	30
2.	कर्मग्रन्थ भाग-4		श्री मरुधर केसरी साहित्य प्रकाशन समिति, ब्यावर	40
3.	कर्मग्रन्थ भाग-5		श्री मरुधर केसरी साहित्य प्रकाशन समिति, ब्यावर	30

जैन कर्म सिद्धान्त विपश्चित्
(वर्गीकृत कर्म-तृतीय)

प्रथम पत्र

1.	पंच संग्रह भाग-6		श्री मरुधर केसरी साहित्य समिति प्रकाशन ब्यावर	50
2.	पंच संग्रह भाग-7		श्री मरुधर केसरी साहित्य समिति प्रकाशन ब्यावर	50

द्वितीय पत्र

1.	पंच संग्रह भाग-8-9		श्री मरुधर केसरी साहित्य समिति प्रकाशन ब्यावर	50
2.	पंच संग्रह भाग-10		श्री मरुधर केसरी साहित्य समिति प्रकाशन ब्यावर	50

जैन कर्म सिद्धान्त तत्त्वज्ञ
(वर्गीकृत कर्म चतुर्थ)

प्रथम पत्र

1.	कर्म प्रकृति भाग-1	क. शिवशर्म सूरि/आचार्य श्री नानेश	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	50
2.	कर्म प्रकृति भाग-2	संक्रमणाकरण, उद्वर्तनाकरण और अपवर्तनाकरण	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	50

द्वितीय पत्र

1.	कर्म प्रकृति भाग-2	उदीरणा करण से संपूर्ण	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	50
2.	सम्यक्त्व के 14 भंग	परिशिष्ट सहित	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	50

जैन कर्म सिद्धान्त निष्णात
(वर्गीकृत कर्म पंचम)

निष्णात संबंधी नियमावली देखें।

वर्गीकृत प्राकृत परीक्षा
जैन प्राकृत शास्त्री
(वर्गीकृत प्राकृत प्रथम)

प्रथम-पत्र

1.	प्राकृत पाठमाला	श्री रतनचंद्रजी स्वामी	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	100

द्वितीय पत्र

1.	दशवैकालिक चयनिका	सं.डॉ. कमलचंद सोमाणी	प्राकृत भारती, जयपुर (राज.)	30
2.	उत्तराध्ययन चयनिका	सं.डॉ. कमलचंद सोगाणी	प्राकृत भारती, जयपुर (राज.)	30
3.	पाइयलच्छी नाममाला	क.कवि धनपाल	भर्द्रकर प्रकाशन, अहमदाबाद (गुज.)	40

जैन प्राकृत विचक्षण
(वर्गीकृत प्राकृत द्वितीय)

प्रथम-पत्र

1.	प्राकृत पाठमाला प्राकृत व्याकरण भाग-1	क. आचार्य श्री हेमचन्द्रजी म.सा.	आगम, अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर	100

द्वितीय पत्र

1.	समराइच्चकहा (प्रथम भव)		श्री अखिल भारत.साधु. जैन संघ, बीकानेर	50
2.	प्रश्न व्याकरण सूत्र (संवर द्वार)	उपा. श्री मधुकर मुनिजी		50

जैन प्राकृत विपश्चित्

(वर्गीकृत प्राकृत तृतीय)

प्रथम-पत्र

1.	प्राकृत व्याकरण (पाठ 3 व 4)		आगम, अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर	100

द्वितीय पत्र

1.	आचारांग चयनिका		प्राकृत भारती, जयपुर	30
2.	ज्ञाताधर्म कथांग सूत्र (अध्ययन 1 से 8)	आचार्य श्री मधुकरमुनिजी		70

जैन प्राकृत तत्त्वज्ञ

(वर्गीकृत प्राकृत चतुर्थ)

प्रथम-पत्र

1.	प्राकृत पैंगलम्	सं. डॉ. भोलाशंकर व्यास	प्राकृत ग्रंथ परिषद, अहमदाबाद (गुज.)	65
2.	प्राकृत में गाथा निर्माण निबंध, अनुवाद आदि अब तक पठित विषय के ज्ञान के आधार पर			35

द्वितीय पत्र

1.	श्री दशवैकालिक सूत्र, प्रथम अध्ययन की अगस्त्य सिद्ध कृत चूर्णिकार		प्राकृत ग्रंथ परिषद, अहमदाबाद (गुज.)	40
2.	प्राकृत भारती (पाठ 8,9,12 व 13 को छोड़कर) (डॉ. प्रेम सुमन जैन)		आगम, अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर	60

जैन प्राकृत निष्णात

(वर्गीकृत प्राकृत पंचम)

निष्णात परीक्षा संबंधी नियम देखें।

वर्गीकृत संस्कृत परीक्षा

जैन संस्कृत शास्त्री

वर्गीकृत संस्कृत-प्रथम

प्रथम-पत्र

1.	लघु सिद्धान्त कौमुदी, भैमी व्याख्या भाग-1	व्याकरण पं. भीमसेन शास्त्री	भैमी प्रकाशन, दिल्ली	100

द्वितीय पत्र

1.	रघुवंशम् (प्रथम व द्वितीय सर्ग)	क.कवि कालीवास	कमल प्रकाशन ट्रस्ट	35
2.	भर्तृहरिनीतिशतकम् (पूर्वार्ध)		राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली	35
3.	धनञ्जयनाममाला		क.कवि. धनञ्जय	
4.	अनेकार्थनाममाला		क.कवि. धनञ्जय	30

जैन संस्कृत विचक्षण

(वर्गीकृत संस्कृत-द्वितीय)

प्रथम-पत्र

1.	लघु सिद्धान्त कौमुदी भैमी व्याख्या भाग-2 व्याकरण पं. भीमसेन शास्त्री	भैमी प्रकाशन, नई दिल्ली	100

द्वितीय पत्र

1.	श्री मज्जवाहर यशोविजयम् (जीवनी तथा भूमिका पृ. 1 से 104)	श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	35
2.	शिशुपालवधम् (प्रथम व द्वितीय सर्ग) (क.महाकवि माघ)	कमल प्रकाशन ट्रस्ट 35	
3.	किरोतार्जुनीयम् (प्रथम व द्वितीय सर्ग) (क.महाकवि भारती)	कमल प्रकाशन ट्रस्ट 30	

जैन संस्कृत विपश्चित्

(वर्गीकृत संस्कृत तृतीय)

प्रथम-पत्र

1.	लघु सिद्धान्त कौमुदी, भैमी व्याख्या भाग 3 व 4 (व्या. पं. भीमसेन शास्त्री)	भैमी प्रकाशन, नई दिल्ली 100	

द्वितीय पत्र

1.	श्री उत्तराध्ययन सूत्र, प्रथम व द्वितीय अध्ययन की शान्त्याचार्य रचित टीका	आगमोदय समिति या जिनशासन आराधना, ट्रस्ट	100

जैन संस्कृत तत्त्वज्ञ

(वर्गीकृत संस्कृत चतुर्थ)

प्रथम-पत्र

1.	लघु सिद्धान्त कौमुदी, भैमी व्याख्या भाग 5 व 6 (व्या.पं.भीमसेन शास्त्री)	भैमी प्रकाशन, नई दिल्ली 100	

द्वितीय पत्र

1.	वृत्त बोध	श्री श्वेता साधु. जैन हिन कारिणी संस्था, बीकानेर	30
2.	संस्कृत में श्लोक रचना निबंध अनुवाद आदि अब तक पठित विषयों के ज्ञान के आधार से	40	
3.	नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग) (क. महाकवि श्री हर्ष)	कमल प्रकाशन ट्रस्ट 30	

जैन संस्कृत निष्णात

(वर्गीकृत संस्कृत पंचम)

निष्णात परीक्षा संबंधी नियमावली देखें।

वर्गीकृत स्तोक परीक्षा

जैन स्तोक शास्त्री

(वर्गीकृत स्तोक प्रथम)

प्रथम-पत्र

1.	प्रज्ञापना सूत्र के थोकड़े भाग-1	श्री अगरचन्द भैंरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था	50
2.	आगम स्तोक मंजुषा भाग-1	श्री अगरचन्द भैंरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था	50

2.	प्रज्ञापना सूत्र के थोकड़े भाग-2	श्री अगरचन्द भैंरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था	50

द्वितीय पत्र

1.	प्रज्ञापना सूत्र के थोकड़े भाग-3	श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	50
2.	आगम स्तोक मंजुषा भाग-2	श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	
2.	सभा द्वार	गोविन्दराम भंसाली, बीकानेर	25
3.	भंवर द्वार	गोविन्दराम भंसाली, बीकानेर	25

जैन स्तोक विचक्षण
(वर्गीकृत स्तोक द्वितीय)

प्रथम पत्र

1.	श्री भगवती सूत्र के थोकड़े भाग-1	श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	50
2.	आगम स्तोक मंजुषा भाग-4	श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	50
3.	श्री भगवती सूत्र के थोकड़े भाग-2	श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	50
4.	आगम स्तोक मंजुषा भाग-7	श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	50

द्वितीय पत्र

1.	श्री भगवती सूत्र के थोकड़े भाग-3	श्री अगरचन्द भैंरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था	50
2.	खंड योजन का थोकड़ा (जंबूद्वीप)	खंड योजन का थोकड़ा (जंबूद्वीप)	50

जैन स्तोक विपश्चित्
(वर्गीकृत स्तोक तृतीय)

प्रथम-पत्र

1.	श्री भगवती सूत्र के थोकड़े भाग-4	श्री अगरचन्दभैंरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था	50
2.	श्री भगवती सूत्र के थोकड़े भाग-5	श्री अगरचन्दभैंरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था	50

द्वितीय पत्र

1.	श्री भगवती सूत्र के थोकड़े भाग-6	श्री अगरचन्दभैंरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था	50
2.	चौबीस ठाणा (जिणधम्मो)	श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	30
3.	नय-निक्षेप का थोकड़ा (जिणधम्मो)	श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	20

जैन स्तोक तत्त्वज्ञ
(वर्गीकृत स्तोक चतुर्थ)

प्रथम-पत्र

1.	श्री भगवती सूत्र के थोकड़े भाग-7 (गमक)	श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर	50
2.	श्री भगवती सूत्र के थोकड़े भाग-8 (गमक)	श्री अगरचन्दभैंरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्थाृ	50

द्वितीय पत्र

1.	श्री भगवती सूत्र के थोकड़े भाग-9	श्री अगरचन्दभैंरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था	60
2.	ज्योतिष चक्र	ज्योतिष चक्र का थोकड़ा	40

जैन स्तोक निष्णात
(वर्गीकृत स्तोक पंचम)

निष्णात परीक्षा संबंधी नियमावली देखें।

वर्गीकृत दर्शन परीक्षा
जैन दर्शन शास्त्री
(वर्गीकृत दर्शन प्रथम)

प्रथम-पत्र

1. भारतीय दर्शन	ले. सतीशचन्द्र चट्टोपाध्याय	पुस्तक भंडार पटना	100

द्वितीय पत्र

1. प्रमाणनय तत्त्व लोकालंकार	क. वादिदेव सूरि/जैन ग्रन्थ	शाला पांजरापोल अहमदाबाद	100

जैन दर्शन विचक्षण
(वर्गीकृत दर्शन द्वितीय)

प्रथम-पत्र

1. स्याद्वाद मंजरी	क. मल्लिषेण सूरि	श्री परम श्रुत प्रभावक मंडल आगास	100

द्वितीय पत्र

1. नंदी सूत्र टीका (पृ. 1 से 42)	क. आ. मलयगिरि	आगमोदय समिति, सूरत	30
2. प्रमाण मीमांसा	सं.प्रं. शोभाचन्द्रजी भारिल्ल	तिलोक रत्न स्था. जैन परीक्षा बोर्ड, पाथर्डी, अहमदाबाद	70

जैन दर्शन विशारद
(वर्गीकृत दर्शन तृतीय)

प्रथम-पत्र

1. षड्दर्शनसमुच्चय	क. हरिभद्र सूरि अनु. सं. डॉ. महेन्द्र कुमार जैन	भारतीय ज्ञान पीठ, दिल्ली	100

द्वितीय पत्र

1. आगम युग का जैन दर्शन	ले. दलसुख मालवणिया	सन्मति ज्ञान पीठ, आगरा	50
2. अनुयोग द्वार सूत्र	प्र.सं. मधुकर मुनिजी प्रकाशक	आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर	50

जैन दर्शन तत्त्वज्ञ
(वर्गीकृत दर्शन चतुर्थ)

प्रथम-पत्र

1. रत्नाकरावतरिका परिच्छेद 1 से 3	क. वादिदेव सूरि/टीकाकार	रत्नप्रभ सूरि लालभाई, दलपत भाई भारतीय संस्कृति विद्या मंदिर, अहमदाबाद	100

द्वितीय पत्र

1. रत्नाकरावतरिका परिच्छेद 4 से 8	(क. वादिदेव सूरि/टीकाकार रत्नप्रभ सूरि)	लालभाई, दलपत भाई भारतीय संस्कृति विद्या मंदिर, अहमदाबाद	100

जैन दर्शन निष्णात
(वर्गीकृत दर्शन पंचम)

निष्णात परीक्षा संबंधी नियमावली देखें।

वर्गीकृत धर्मकथानुयोग परीक्षा

जैन धर्मकथानुयोग शास्त्री

(वर्गीकृत धर्मकथानुयोग प्रथम)

प्रथम-पत्र

1.	उत्तराध्ययन सूत्र (अध्ययन 8,9,12, 13,14,18,19,20,21,22,23-25,27)	प्र. सं. श्री मधुकर मुनिजी म.सा. आगम प्रकाशन समिति ब्यावर	100

द्वितीय पत्र

1.	धर्मकथानुयोग धर्मकथानुयोग : एक समीक्षात्मक अध्ययन) की प्रस्तावना-	संक. मुनिश्री कन्हैया लालजी कमाल आगम अनुयोग ट्रस्ट, अहमदाबाद	30
2.	धर्मकथानुयोग प्रथम स्कंध-सं	क.मुनिश्री कन्हैया लालजी कमाल आगम अनुयोग ट्रस्ट, अहमदाबाद	70

जैन धर्मकथानुयोग विचक्षण

(वर्गीकृत धर्मकथानुयोग द्वितीय)

प्रथम-पत्र

1.	धर्मकथानुयोग द्वितीय स्कंध-	धम्मकहाणुओगे/पूर्ववत्	100

द्वितीय पत्र

1.	धर्मकथानुयोग तुतीय, चतुर्थ स्कंध-	धम्मकहाणुओगे/पूर्ववत्	100

जैन धर्मकथानुयोग विपश्चित्

(वर्गीकृत धर्मकथानुयोग तृतीय)

प्रथम-पत्र

1.	धर्मकथानुयोग स्कंध 5,6	धम्मकहाणुओगे/पूर्ववत्	100

द्वितीय पत्र

1.	तीर्थंकर चरित्र भाग-1	रतनलाल दोशी अ. भा. सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, ब्यावर	100

जैन धर्मकथानुयोग तत्त्वज्ञ

(वर्गीकृत धर्मकथानुयोग चतुर्थ)

प्रथम-पत्र

1.	तीर्थंकर चरित्र भाग-2	रतनलाल वांशी अ.भा.सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ ब्यावर	100

द्वितीय पत्र

1.	तीर्थंकर चरित्र भाग-3	रतनलाल वांशी अ.भा.सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ ब्यावर	100

जैन धर्मकथानुयोग निष्णात

(वर्गीकृत धर्मकथानुयोग पंचम)

निष्णात परीक्षा संबंधी नियमावली देखें।

निष्णात

परीक्षा संबंधी नियमावली

1. निष्णात परीक्षा यथासंभव आचार्य भगवन के पास अथवा बोर्ड द्वारा नियुक्त साधु-साध्वी या श्रावक-श्राविका द्वार प्रत्यक्ष रूप से ली जा सकेगी।
2. परीक्षा का विषय-वर्गीकृत संबंधी चारों वर्ष (शास्त्री, विचक्षण, विपश्चित, तत्त्वज्ञ) के सम्पूर्ण विषय। एतदर्थ विषयों का रटना अपेक्षित

नहीं है, किन्तु मौलिक अवधारणा विषयों की स्पष्ट समझ अपेक्षित रहेगी। इसमें परीक्षार्थी से वर्गीकृत के विषश्य संबंधी पुस्तक का कोई विषय सामने रखकर समझाने या पढ़ाने को भी कहा जा सकता है।

3. परीक्षा लिखित या मौखिक या दोनों प्रकार से ली जा सकती है।
4. वर्गीकृत में अधीन सम्पूर्ण विषयों में मौलिक अवधारणाओं (Concepts) की स्पष्टता पूछी जा सकती है।
5. निष्णात की परीक्षा तत्त्वज्ञ परीक्षा देने के कम से कम तीन महीने बाद परीक्षक व परीक्षार्थी के पारस्परिक संयोग की अनुकूलतानुसार हो सकती है।
6. जो वर्तमान में वर्गीकृत परीक्षा दे रहे है, उनके लिए निष्णात परीक्षा उन्हीं ग्रंथों के आधार पर ली जाएगी जिनकी परीक्षाएँ वे नवीन पाठ्यक्रम के लागू होने के बाद देंगे। उदाहरण किसी विद्यार्थी ने सन् 2013 में स्तोक शास्त्री, द्वितीय खंड की सम्पूर्ण परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है। वह आगे के वर्षों में स्तोक संबंधी विपश्चित व तत्त्वज्ञ की परीक्षा देकर निष्णात परीक्षा देगा तो उसे रत्नाकर में स्तोक वर्गीकृत के चारों वर्षों के प्रश्न न पूछकर केवल स्तोक विपश्चित व स्तोक तत्त्वज्ञ संबंधी प्रश्न पूछे जायेंगे।

जैन सत्यार्थ गवेषक

1. इस परीक्षा में शोद्यार्थी को एक शोधकार्य प्रस्तुत करना होगा जिसके अन्तर्गत कम से कम दस शोध पत्र होंगे।
2. शोधकार्य करने की अवधि कम से कम एक वर्ष की है, अधिक से अधिक कितनी भी हो सकती है।
3. सर्वप्रथम शोद्यार्थी को जैन सत्यार्थ गवेषक हेतु शोधकार्य करने की अनुमति प्राप्त करने के लिए परीक्षा बोर्ड को एक आवेदन पत्र प्रस्तुत करना होगा। आवेदन-पत्र का प्रारूप इस प्रकार है।

जैन सत्यार्थ गवेषक हेतु आवेदन-पत्र

नाम.....वय.....दीक्षापर्याय.....

निष्णात परीक्षा किस वर्ष में उत्तीर्ण की.....

4. इस परीक्षा में जो दस शोध पत्र प्रस्तुत किये जायेंगे, उनमें आवृत सत्यों को नवीन शोध पूर्वक सप्रमाण अनावृत्त करना होगा। इसके अन्तर्गत
    1. चली आ रही अनागमिक मान्यताओं का सप्रमाण निरसन किया जा सकता है।
    2. वर्तमान में अप्रकट महत्त्वपूर्ण तथ्यों का सप्रमाण आविष्करण किया जा सकता है।
    3. असम्यक् अर्थ में प्रयुक्त होने वाले तकनीकी शब्दों के सत्यार्थ को प्रमाणित किया जा सकता है।
    4. आगमानुवाद या टीका आदि ग्रंथों के अनुवाद आदि में रही महत्वपूर्ण त्रुटियों को सप्रमाण निर्दिष्ट कर सम्यक् अनुवाद आदि प्रस्तुत किया जा सकता है।
    5. ज्ञान, दर्शन चारित्र की विशिष्ट प्रगति हेतु नवीन मार्ग का सप्रमाण आविष्कार किया जा सकता है।
    6. टीका आदि ग्रंथों में आये आगम विरूद्ध उल्लेखों को सप्रमाण निर्दिष्ट किया जा सकता है।
    7. खंडन, मंडन संबंधी कोई नवीन अकाट्य तर्क भी प्रस्तुत किये जा सकते हैं।
    8. जो भी शोधपत्र प्रस्तुत किये जाएँ, उनमें नवीनता एवं सप्रमाणता का होना नितांत आवश्यक है।

'नवीनता' का तात्पर्य यह है कि वह विषय अब तक इस रूप में किसी अन्य के द्वारा अभिव्यक्त नहीं किया गया है। नवीनता का प्रमाणीकरण 'शोध-पत्र परीक्षक समिति' के द्वारा किया जायेगा एवं वही मान्य होगा। शोधार्थियों के लिये यह उपयुक्त है कि वे जो विषय शोध हेतु स्वीकार करना चाहते हैं, वह नवीन हैं या नहीं-इस बात का प्रमाणीकरण शोध पत्र परीक्षक समिति द्वारा करवा लें। नवीनता का प्रमाणीकरण करवाये बिना किसी शोधार्थी ने शोध में श्रम कर लिया एवं शोधपत्र प्रस्तुत करने पर वह शोध पत्र 'नवीन' ज्ञात नहीं हुआ एवं स्वीकार नहीं हुआ तो इसके लिए परीक्षा बोर्ड जिम्मेदार नहीं होगा।

'सप्रमाणता' का तात्पर्य है कि शोधपत्र में अपनी नई बात को प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त भौतिक प्रमाणों का होना। प्रमाण के बिना कल्पना मात्र से किसी शोध को मान्य नहीं किया जायेगा। 'मौलिक प्रमाण' का तात्पर्य आगम, चूणि, भाष्य टीकादि से है। आगमों के भावों की सिद्धि के लिए यथास्थान दिए जाने वाले वर्तमान विज्ञान, आयुर्वेद ग्रंथ इत्यादि के मौलिक प्रमाण सशक्त होने पर स्वीकार किये जा सकते हैं। अर्वाचीन हिन्दी, गुजराती अनुवाद या घासीलालजी म.सा. आदि के उद्धरण प्रमाण रूप में स्वीकृत नहीं होंगे। अनेक शिथिल

प्रमाणों की अपेक्षा एक अकाट्य प्रमाण ज्यादा महत्वपूर्ण है। शोधपत्र में विस्तार की अपेक्षा अकाट्य प्रमाणों की उपस्थिति ज्यादा महत्व रखती है। किसी ग्रंथ का जो पाठ प्रमाण रूप से स्वीकार किया जा रहा है, उस पाठ का यथावत उद्धरण देना भी आवश्यक है। साथ ही ग्रंथस का नाम, अध्याय गाथा, आदि का क्रमांक, लेखक का नाम, लेखक किस काल में हुए, ग्रंथ प्रकाशक का नाम, प्रकाशन वर्ष, संस्करण, पृष्ठ संख्या इत्यादि का उल्लेख होना जरूरी है।

+ किसी विषय के पूर्व से प्रमाणित होने पर भी यदि उसके लिए कोई अन्य नवीन अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत करे तो, वह भी शोध पत्र के रूप में स्वीकार्य है।

+ दस शोधपत्रों में से प्रत्येक पत्र भिन्न-भिन्न विषय का भी हो सकता है एवं एक विषय से संबंधित भी।

+ शोध कार्य प्रस्तुत करने के बाद शोध पत्रों पर कार्य की श्रेष्ठता के आधार पर अंक दिये जायेंगे तथा शोध कार्य के विषय में शोधकर्त्ता की लिखित या मौखिक या दोनों तरह से परीक्षा ली जा सकती है।

इस परीक्षा के उर्त्तीण होने पर ही उसे जैन सत्यार्थ गवेषक परीक्षा उर्त्तीण माना जायेगा।

पिछले वर्ष सभी साधु-साध्वियों से यह जानकारी चाही गई थी कि कितने-कितने साल का प्रायश्चित बाकी है तथा किस विधि से प्रायश्चित उतारने की प्रक्रिया की जा रही है इत्यादि। प्राप्त उत्तरों में से कुछेक से ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रायश्चित उतारने की विधि आदि के बारे में कहीं-कहीं कुछ अस्पष्टता है। अत: प्रायश्चित उतारने की विधि आदि के बारे में कुछ व्यक्त किया जा रहा है।

एक वर्ष भर का प्रायश्चित उतारने के विकल्प ये हैं।

1. छ: की तपस्या के ऊपर पौरुषी
2. बत्तीस आगमों के मूल पाठ का स्वाध्याय
3. एक सौ बीस आयंबिल
4. एक सौ अस्सी एकासन
5. दो हजार गाथाओं को कंठस्थ करना
6. चार माह निरन्तर एकान्तर उपवास
7. बारह तेला करना
8. चिन्तन परिषद द्वारा प्रस्तुत तात्कालिक प्रायश्चित वहन विधि के द्वारा

ज्ञातव्य है कि उपर्युक्त विकल्पों में से किसी भी विकल्प से प्रायश्चित उतारा जाय, दोषों की आलोचना अनिवार्य है ही। प्रायश्चित विधान में जिन दोषों का प्रायश्चित स्पष्ट व्यक्त है उनकी आलोचना सिंघाड़ा पति-शासन दीपक/शासन दीपिका म.सा. के पास करके विध ाान रूप प्रायश्चित स्वीकार करना चाहिए तथा प्रायश्चित विधान में जिन विषयों को आलोच्य कहा गया है, उनकी आलोचना आचार्यश्रीजी के पास करके दिये जाने वाले प्रायश्चित को स्वीकार करना चाहिए।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि उपयुक्त आठ विकल्पों में से किसी एक विकल्प को स्वीकार करके चलने से ही प्रायश्चित उतरा हुआ माना जायेगा, किन्हीं दो या तीन विकल्पों को मिलाकर करने से नहीं। यथा-साठ आयबिल और नब्बे एकासन करने सक एक वर्ष का प्रायश्चित उतरा हुआ नहीं माना जायेगा।

तात्कालिक प्रायश्चित वहन विधि में दोषों को लिखकर बताने के बाद किये जाने वाले स्वाध्याय, वन्दना, मौन आदि से ही प्रायश्चित उतर सकता है। लिखकर बताने के पूर्व किये जाने वाले स्वाध्याय आदि से नहीं। बिना लिखे एवं बताये केवल स्वाध्याय आदि करते जाने से उस विकल्प से प्रायश्चित नहीं उतर सकेगा। साथ ही यह भी ध्यान में ले की बात हैं कि पुराने वर्षों या महीनों का प्रायश्चित इस विधि से नहीं उतारा जा सकेगा। उसे शेष विकल्पों से ही उतारने का लक्ष्य रखा जाना चाहिए।

प्रायश्चित प्रति वर्ष उतर जाय यह सर्वश्रेष्ठ है। कदाचित् प्रतिवर्ष न उतर सके तो तीन वर्षों के भीतर प्रायश्चित उतारने का लक्ष्य रखना ही चाहिए। सिघाड़ा-पति-शासन दीपक/शासन दीपिका जी म.सा. इस बात का ध्यान रखावें कि उनके समीपवर्ती जिन मुनिराजों/साध्वियों का प्रायश्चित तीन वर्षों से अधिक का बाकी रहे, उसकी जानकारी यथा समय आचार्य प्रवर को देते रहें।

जो मुनिराज/साध्वी जी उपर्युक्त की स्थिति में न हो वे अवगत करावे। एक वर्ष के प्रायश्चित स्वरूप एक दिन दीक्षा छेद के माध्यम से उनका प्रायश्चित हल्का हो सकता है।